अवस्था में श्रीभगवान् के सान्निध्य के प्रताप से भक्त को सम्पूर्ण दिव्य गुणों की उपलब्धि हो जाती है।

श्रीमद्भागवत श्रीभगवान् और उनके भक्तों में होने वाले भक्तिरस की कथाओं से परिपूर्ण है; इसीलिए श्रीमद्भागवत भक्तों को प्राणोपम प्रिय है। श्रीमद्भागवत का यह अप्रतिम वैशिष्ट्य है कि इसके वर्णन में प्राकृत क्रियाओं, इन्द्रियतृप्ति अथवा मोक्ष का लेश भी नहीं है; यही वह कथा है जिसमें श्रीभगवान् और उनके भक्तों के स्वरूप का सर्वांगीण वर्णन हुआ है। अतएव आश्चर्य नहीं कि कृष्णभावनाभावित भगवत्प्राप्त पुरुषों को भागवती कथा के श्रवण में उसी प्रकार नित्य नवायवान आनन्दरस की अनुभूति होती है, जैसी युवक-युवती को परस्पर संग करने से होती है।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।१०।।

तेषाम्=उन; **सततयुक्तानाम्**=निरन्तर तत्पर; **भजताम्**=भजने वाले भक्तों को; **प्रीतिपूर्वकम्**=प्रेमभाव सहित; **ददामि**=मैं देता हूँ; **बुद्धियोगम्**=सच्ची बुद्धि; **तम्**=वह; **येन**=जिससे; **माम्**=मुझ को; **उपयान्ति**=प्राप्त होते हैं; **ते**=वे।

अनुवाद

उन निरन्तर भक्ति के परायण, प्रेमसहित मुझे भजने वाले भक्तों को मैं वह बुद्धियोग देता हूँ, जिससे वे मुझ को प्राप्त हो जाते हैं।।१०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में प्रयुक्त **बुद्धियोगम्** शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण है। द्वितीय अध्याय में अर्जुन को अनेक तत्त्वों का उपदेश करके श्रीभगवान् बोले कि वे उसके लिए बुद्धियोग का उपदेश करेंगे। यहाँ भी उसी बुद्धियोग का प्रतिपादन है। **बुद्धियोग** का तात्पर्य कृष्णभावनाभावित कर्म करना है। यही परम बुद्धिमानी है। **बुद्धि** शब्द का अर्थ है निश्चय-शक्ति और **योग** का अर्थ है दिव्य उत्कर्ष। अपने घर—भगवान् के धाम को जाने के लिए जब मनुष्य सर्वतोभावेन कृष्णभावना रूपी भक्तियोग के परायण हो जाता है तो उसके कर्म को **बुद्धियोग** कहा जाता है। **बुद्धियोग** वस्तुतः वह पद्धति है जिसके द्वारा इस संसार के बन्धन से मुक्ति होती है। उन्नति के परम लक्ष्य श्रीकृष्ण हैं—जनसाधारण इस परम सत्य को नहीं जानता। अतएव भक्तों और प्रामाणिक आचार्य (सद्गुरु) के सत्संग का बड़ा माहात्म्य है। यह जानना आवश्यक है कि श्रीकृष्ण जीवन के एकमात्र लक्ष्य हैं, क्योंकि लक्ष्य का निर्णय हो जाने पर पथ भी शनैः-शनैः उत्तरोत्तर पार कर ही लिया जाता है और अन्त में परम लक्ष्य की प्राप्ति भी हो जाती है।

जीवन के लक्ष्य को जानते हुए भी जो मनुष्य कर्मफल में आसक्त है, वह कर्मयोगी है। जो जानता है कि लक्ष्य श्रीकृष्ण हैं, पर फिर भी उनका ज्ञान अर्जित करने के लिए मनोधर्म में रत है, वह ज्ञानयोगी है। इन सब से विलक्षण, लक्ष्य को जानकर पूर्ण कृष्णभावना और भक्तियोग के द्वारा श्रीकृष्ण की प्राप्ति में तत्पर होने का